आह्निक - ऊं.नं ९२२

पद्धति

उपनयनपद्धति - समीत

३३१

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

उ.प.

अथउपनयनपद्धतिः

१ उपनयन के दिन प्रातःकाल पिता स्नान और उपासनाकरके विवाहप्रकरण प्रोक्तरीति से) अग्निसंस्थापन करें। फेर मानवक को प्रातभोजन कराके अग्निके उत्तर ओर लेजाकर सशिखमुण्डन, और स्नान कराके कुण्डलादि द्वारा अलङ्कृत और क्षौमादि वस्त्रावृत करें। तदनन्तर उसे अग्निके दक्षिणमे लाकर प्रादेश प्रमाण घृताक्त समिध् अमन्त्रक अग्निमे होमकरें। फेर उसमें पांच घृताहुति दें फेर पिता मानवक को लेकर उपासना स्थलमे आचार्य्य के साम्हने बैठें और मानवक को उत्तरास्य बैठावें। तब आचार्य्य साधारण ब्रह्मोपासना-करके उसदिनके कृत्य मे कल्याणहोने के निमित्त ईश्वर से प्रार्थना करें।

फेर मानवक आचार्य्य के अभिमुख खड़ा होकर कृताञ्जलि हो और उसके दक्षिणमे दण्डायमान (मन्त्रवाचयिता) ब्राह्मण आचार्य्य और मानवक की अञ्जलिमे कुछजलदे।

(2)

उ॰प॰ तदनन्तर गृहीतो दकाञ्जलि आचार्य्य गृहीतोदकाञ्जलि मानवकको देख कर यह करें ।

२ प्रजापतिऋषि रनुष्टुप्छन्दो ब्रह्मदेवता उपनयने मानवकं प्रेक्षमाणस्याचार्य्यस्य जपे विनियोगः ।

ॐआगन्त्रा समगन्महि प्रसुमर्त्यं युजोतन नअरिष्टाः सञ्चरे महि
स्वस्तिसञ्चरतादयम् ।

(हे ईश्वर! तुम इस शोभमान मनुष्य ब्रह्मचारीको हम लोगों के साथ संयुक्त करो, हमलोगभी इस आगमन शील ब्रह्मचारी के साथ सङ्गन्त होवें, और विघ्नरहित होकर इसके साथ सञ्चरण करें, यहभी कल्याण के साथ विचरणकरे) तदनन्तर आचार्य्य मानवकसे यह मन्त्र पाठ करावें ।

ॐव्रतानां व्रतपते व्रतञ्चरिष्यामि तत्तेप्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यासमिदमहमन्टतात् सत्यमुपैमि

उ.प. (हे व्रतपति। मैं जो व्रत करूंगा सो तुमसे कहता हूं मैं उसे कर सकूं और उस व्रत रूप समृद्धि के द्वारा अनृत से
२ सत्य को प्राप्त हो ऊं) फेर

(2A)

प्रजापति ऋषिराचार्यो देवता उपनयने मानवक पाठे विनियोगः

ऊँ ब्रह्मचर्य्यमागामुपमानयस्व

(हे गुरो! मैने ब्रह्मचर्य्य धारण किया है मुझे उपनीत करो अर्थात् ब्रह्म के समीप लेजाओ)

तब आचार्य्य उसका नाम पूछे। यथा

प्रजापति ऋषि मानवको देवता उपनयने मानवक नाम प्रश्ने विनियोगः

ऊँ को नामासि (तुम्हारा नाम क्या है)

मानवक। यह कहे

The Rajawade ... Dhule and Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai: Joint project

उ.प. प्रजापति र्ऋषि र्म्मानवको देवता उपनयने मानवक नाम कथने विनियोगः ।

ध ॐ अमुक ब्रह्माश्मितो नामास्मि (मेरानाम अमुक ब्रह्माश्मितहै)

तब आचार्य्य और मानवक दोनो गृहीत जलाञ्जलित्यागकरें ।

फेर आचार्य्य अपने दहने हाथसे मानवकका साङ्गुष्ठ दक्षिण हस्त धारण, और वामहस्त से उस्का वामस्कन्ध स्पर्श करके यह मन्त्र पाठ करे ।

प्रजापति र्ऋषि सविता देवता उपनयने ब्रह्मचारि वामस्कन्धस्पर्शने विनियोगः

ॐ देवायत्वा सवित्रे परि ददामि अमुक देवशर्म्मन् (वा ब्रह्माश्मिन)

(हे अमुक ब्रह्माश्मिन ! जगत्प्रसविता ईश्वरके तईं मे तुके देताहूं)

(3A)

उ.प. **यज्ञोपवीतकृत्यं ।** तदनन्तर आचार्य्य अग्निके उत्तर ओर जाकर उत्तराग्र कुशाके ऊपर पूर्वमुख होकर
५ उपवेशन करें। और मानवक भी उत्तराग्र कुशाके ऊपर दक्षिण जानु द्वारा भूमिस्पर्श करके आचार्य्यके अभिमुख उपवेशन करे। तब आचार्य्य मानवकको प्रदक्षिणकरके त्रिवृत मुञ्जमे खलापहरावें।

फेर इसमंत्रके साथ कृष्णाजिन सहित यज्ञोपवीत मानवक को परिधान करावें।

प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो विश्वेश्वर देवता उपनयने यज्ञोपवीत दाने विनियोगः।

ओं यज्ञोपवीत मसि यज्ञस्यत्वोपवीतेनोपनेह्यामि

(तू यज्ञोपवीतहै, यज्ञ अर्थात उपासनाके पास पहूचाने वालाजो तूहै तेरे द्वारा मै ईश्वर के पास पहूंचूं)

फेर आचार्य्य मानवकसे कहें।

ओं अधीहिभोः सावित्रीं, मे भवान् अनुब्रवीतु ।

Joint Project of Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

उ.प. ८ (भो ब्रह्मचारि सावित्री पढ़ो हम जैसे कहते जांय वैसे तुमभी बोलो।

तब मानवक अवहित होनेसे आचार्य्य पहिले पाद पाद, फेर दो दो पाद फेर सारी सावित्री पढ़ावें। यथा

विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपोपनयने विनियोगः।

(५) ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

(उस जगत्प्रसविता देवता के वरणीय प्रकाशको हम ध्यान करते हैं। जो हमारी बुद्धिको प्रेरणा करे)

फेर आचार्य्य मानवक को व्याहृति त्रय पृथक् पृथक् करके ॐकार पूर्व्वक अध्ययन करावें। यथा

ॐ भूः। ॐ भुवः। ॐ स्वः।

(पृथिवी, अन्तरिक्ष, और स्वर्लोक मे उसी परमेश्वरका प्रकाश है) फेर आचार्य्य मानवक के हाथमे विल्वदण्ड वा पलाश दण्ड (वा और कोई अच्छा सोटा) पकड़ा कर भिक्षाके निमित्त भेजें।

उ.प. मानवक पहिले माके पास जाकर यह कहे। ॐ भवति भिक्षांदेहि (भीखदीजिये)

भीख पाने से कहे ॐ स्वस्ति

फेर मातृबन्धु स्त्रीयों के पास, फेर पिताके पास, फेर औरों के पास भीख मांगे। जब पुरुष के पास भीखमांग

(4A)

ने जावे तो ऐसा कहे। (ॐ भवन् भिक्षांदेहि)

जो कुछ भीख मिले वह लाकर आचार्य्य के पास रखदे। तब आचार्य्य उस को आसन पर बैठाकर कहें।

यथा त्वयासर्वतोभिक्षागृहीता तथा सर्वतः सत्यंज्ञानंगृहीत्वाविवेकं निवेदय

जैसे तूने सबसे भीखली इसीप्रकार सबसे सत्य ज्ञान ग्रहण कर और विवेक रूप आचार्य्य के पास रख

इतियज्ञोपवीन कृत्यं

फेर आचार्य्य बैठकर और मानवक को बैठाकर सम्बोधन करें।

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

उ-प. प्रजापति ऋषि ब्रह्मचारी देवता उपनयने ब्रह्मचारि सम्बोधने विनियोगः
८

ॐ ब्रह्मचारि अमुक देवशर्म्मन्(वा ब्रह्मास्मिन) अवहितं शृणु ।

(हे अमुक ब्रह्मचारि सावधान होकर सुन)

(5)

सत्यान्नप्रमदितव्यं धर्म्मान्नप्रमदितव्यं कुशलान्नप्रमदितव्यं

सत्यसे प्रमाद नकरे, धर्म्मसे प्रमाद न करे, कुशलसे प्रमाद नकरे ।

सत्यं वद । समूलो वा एष परि शुष्यति योऽनृत मभिवदति ।

सत्य कहो, जो झूठ कहता है उसका आत्मा धर्म्म से शुष्क होता है ।

धर्म्मं चर । धर्म्मात्परं नास्ति । धर्म्मः सर्व्वेषां भूतानां मधुः ॥

धर्म्म आचरण करो; धर्म्म से बड़ा कुछ नहि धर्म्म सब जीवों का मधु है ।

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

उ.प.
९
(5A)

श्रद्धया देयं। अश्रद्धया अदेयं।

श्रद्धा के साथ दान करे, श्रद्धारहित होकर दान न करे।

मातृ देवो भव पितृ देवो भव आचार्य्य देवो भव।

माता को देवता के समान जानो पिता को देवता के समान जानो, आचार्य्य को देवता के समान जानो।

यान्यनवद्यानि कर्म्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि।

जो अनिन्दित कर्म्म हैं वह करो जो निन्दित हैं वह न करो।

यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयो पास्यानि नो इतराणि।

जो हमारे अच्छे काम है उन का अनुसरण करो अन्य का नहि।

सत्यं मृदु प्रियं वाक्यं धीरो हितकरं वद आत्मोत्कर्षं तथा निन्दां परेषां परिवर्ज्जय।

३.५ धीर होकर सत्य, मृदु, प्रिय वाक्य कहो, अपनी बड़ाई और दूसरे की निन्दाको त्याग करो।

१० धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्म्म लक्षणम्।

धैर्य्य, क्षमा, इन्द्रिय, दमन, अचौर्य्य, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध, यह दश धर्म्मके लक्षणहैं।

यथैवात्मापरस्तद्वद्द्रष्टव्यः शुभमिच्छता सुखदुःखानितुल्यानि यथात्मनि तथापरे।

जो कल्याणकी इच्छाकरे उसे चाहिये कि जैसे अपने को देखे वैसेहि दूसरे को, क्योंकि सुखदुःख जैसे अपनेको होता है वैसेहि दूसरे को।

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ब्रह्मएवोपासितव्यः तपसा ब्रह्मविजिज्ञासस्व

स्वाध्याय पाठ किया करो। ब्रह्मकी उपासना किया करो। चित्तकी एकाग्रता करके ब्रह्मके जानने की इच्छाकरो।

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।

(61)

A joint project of the Phule Ambedkar Samshodhan Mandal, Dhule and Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

उ.प. परमात्मा का दर्शन, श्रवण, मनन और निदिध्यासन करनाचाहिये।

११ बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपं सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति।
दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च पश्यत्स्विहैव निहितं गुहायाम्।

वह सबसे बड़ा है, उसका रूप दिव्य और अचिन्त्य है, वह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म भासता है।
दूर से दूर है और यहां निकट भी है; वह यहां हि बुद्धिमान जीवों के आत्मा मे स्थित है।

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्म्मणा वा।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः॥

आंखों से कोई उन्हे देख नहि सकता, वचन से कोई उनके स्वरूप का वर्णन नहि कर सकता, और किसी इन्द्रिय से, तपस्या से, वा कर्म्म से भी उन्हे कोई पा नहि सकता, ज्ञान के प्रसाद से जब चित्त शुद्ध होता है तब निर्म्मल ध्यान करने से उसका दर्शन पाते हैं।

उ.प. तमीश्वराणांपरमं महेश्वरं तंदेवतानांपरमञ्च दैवतम् ।
१२ पतिं पतीनां परमं परस्तात् विदामदेवं भुवनेशमीड्यं ॥

सब प्रभुवों के जो परम प्रभु महेश्वर हैं, सब देवताओं के जो परम देवता हैं। पतियों के जो पति हैं परे से जो परे हैं, सारे भुवनोंके जो स्वामी हैं, और जो स्तुति के योग्य हैं उन्हे हम जानें ।

न तस्य कार्य्यं करणञ्च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ॥

उन्के कार्य्य और करण (शरीर और इन्द्रिय) नहि हैं, उनके समान वा उनसे अधिक कोई नहि दीखता, उनकी विचित्र और महती शक्ति सर्व्वत्र श्रुत होती है, उनकी ज्ञान बल क्रिया स्वाभाविकी है ।

एष सर्व्वेश्वर एष भूताधिपतिरेष भूतपाल एष सेतुर्विधरण एषां लोकानामसम्भेदाय ।

(7A)

उ.प. ये सबके ईश्वर हैं, ये जीवों के अधिपति हैं ये जीवों के प्रतिपालक हैं, ये लोकभङ्ग निवारणार्थ सेतुस्वरूप
१३ होकर सबको धारण किये हुए हैं।

नित्योनित्यानांचेतनश्चेतनानामेकोबहूनां योविदधाति कामान्।
तमात्मस्थंयेऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषांशान्तिः शाश्वतीनेतरेषाम्॥

नित्य(जीवों)मे भी जो नित्य है, चेतनों मे जो चेतन है, और जो अकेला बहुतों की कामनाओं का विधान करता है उसे जो धीर पुरुष अपने आत्मामे स्थित देखते हैं उन्हीकी नित्य शान्ति होती है अन्यकी नहि।

महान्प्रभुर्वैपुरुषःसत्त्वस्यैषप्रवर्त्तकः। सुनिर्मलामिमांशान्तिमीशानोज्योतिरव्ययः॥

यह महान् पुरुष सबका प्रभु है। यह ज्ञान-ज्योतिस्वरूप अव्यय ईश्वर सुनिर्मल शान्तिके उद्देश्यसे धर्मका प्रवर्त्तक है।

यथासौम्यवयांसिवासोवृक्षंसंप्रतिष्ठन्ते। एवंहवैतत्सर्व्वंपरआत्मनिसंप्रतिष्ठते ॥

उ·प हे सौम्य जैसे पक्षी अपने वासस्थान वृक्षको आश्रय करके रहते हैं, वैसेहि सारा जगत् उस पर
४ मात्मा मे स्थित है ।

एको देवः सर्व्वभूतेषुगूढः सर्व्वव्यापी सर्व्वभूतान्तरात्मा ।
कर्म्माध्यक्षः सर्व्वभूताधिवासः साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥

एक देवता सब जीवों मे गूढ़ रूपसे स्थित है, सर्व्वव्यापी है, और सब जीवों का अन्तरात्मा है, तावत् शुभ कर्म्मों का अध्यक्ष है, सब जीवों मे उसका अधिवास है, सबका साक्षी, और चेतयिता है, और अकेला है ; सृष्टिके गुण उस मे नहि ।

नसन्दृशेतिष्ठतिरूपमस्य नचक्षुषापश्यतिकश्चनैनम् ।
हृदामनीषामनसाभिक्लृप्तो यएनमेवंविदुरमृतास्तेभवन्ति ॥

Joint Project of Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(8A)

उ.प. इनका स्वरूप चक्षुगोचर नहि होता, इसलिये कोई इनको आंखोंसे देख नहि सकता। ये हृदय की
१५ प्रीति, विशुद्ध बुद्धि और चिन्तासे लक्ष्य होते हैं। इसप्रकारसे जो उन्हे जानते हैं वे अमृत होते हैं।

स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिर्ज्ञः कालकालोगुणी सर्व्वविद्यः।
प्रधानक्षेत्रज्ञपतिर्गुणेशः संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः ॥

वह विश्वका बनाने वाला, विश्वका जानने वाला, आत्माओंकी उत्पत्तिका कारण, सर्व्वज्ञ, कालका नियामक, गुणवान् और सब विद्याओंका आधार है। प्रकृति और जीवका पतिहै, गुणों का ईश्वर है। संसार की उत्पत्ति, स्थिति और मुक्तिका हेतुहै।

ॐ सत्यंशिवं सुन्दरं (इत्येवंपरमात्मानं पुरुषं सर्व्वदाचिन्तय) ॥

वह परमेश्वर सत्यस्वरूप, मङ्गलमय, और सर्व्वोत्तमहै (इसप्रकारसे उसपरमात्मा पुरुषको सर्व्वदास्मरण करो)।

Rajwade Sanshodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai." " Joint project of

उ.प. एष आदेश एष उपदेश एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यमेवमुपासितव्यम् ॥
१८ यहि आदेश है, यहि उपदेश है, यहि अनुशासन है, इस प्रकारसे उस्की उपासना करनी चाहिये
इस प्रकार से उस्की उपासना करनी चाहिये ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः हरिः ॐ

यह सब सुन कर ब्रह्मचारी कहैं ।

ॐ बाढं । यद्भवता कृपयोपदिष्टं तद्धारयिष्ये ।

बहुत अच्छा । आपने कृपाकरके जो उपदेश दिया उसको मै मनमे धारण करूंगा ॥

फेर मानवक को ब्रह्मोपासना की रीति सिखावें और यह अनुशासन करें कि उक्त रीतिसे प्रतिदिन अन्यून दो वार उपासना करे । फेर ईश्वरसे मानवक के आत्माके कल्याण के निमित्त आचार्य्य प्रार्थना करें ।

(9A)

उ.प. तब मानवक भी प्रार्थना करे। फेर आचार्य्य को प्रणाम करे। आचार्य्य आशीर्व्वाद करे। फेर ब्रह्मचारी और
१२ सब गुरुजन को प्रणाम और सभासद को नमस्कार करे।

तब अग्निमे तीन वार घृताहुति देकर अग्निरक्षकको दक्षिणा देवे अग्निरक्षक आशीर्व्वाद करे और अग्निको शान्त करे। ब्रह्मचारी उपासना मण्डपमे बैठ कर संक्षेप उपासना को कण्ठ करे। और कोई बातचीत साँझतक न करे। फेर सायंकालीन संक्षेप उपासना करके हविष्यान्न भोजन करे। रात्रिको भूमिमे शयन करे। फेर तीन दीन तक पूरी उपासना शिक्षा करे। और प्रातः सन्ध्या और सायं सन्ध्या संक्षिप्त उपासना करे।

समावर्त्तन

चौथे दिन ब्रह्मचारी स्नान और संक्षेप उपासना करके उपासना मण्डपमे वेदीके सन्मुख जा कर बैठे। आचार्य्य साधारण ब्रह्मोपासना करें। तदनन्तर ब्रह्मचारीसे यह मन्त्र पढ़वावें।

(10)

उ.प. ओं व्रतानां व्रतपते व्रतमचार्षं तन्नेप्रब्रवीमि तदशकं तेनर्द्धा समिदमहमनृतात्सत्यमुपागाम् ।
१८ हे व्रत पति ! मैने जो व्रत अनुष्ठान किया है वह तुमसे कहता हूं, मै उसे कर सका हूं और उस व्रतरूप सम्यद्धि द्वारा अनृत से सत्यको प्राप्त हुआ हूं ।

फेर ब्रह्मचारी प्रार्थना करें ।

फेर आचार्य्य द्वारा प्रेरित होकर स्नान करे । और खड़ा होकर नीचे की ओर मेखलाको परित्याग करताहुआ यह मन्त्र पढ़े ।

ओं उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमंश्रथाय ।

(हे ईश्वर मेरे कण्ठावस्थित पाशको अवतरण करो और पादावस्थित पाशको अवतरण करो कटिदेशावस्थित पाशको शिथिल करो) फेर पुराने यज्ञोपवीत को त्याग करे और इस मन्त्रसे नये यज्ञोपवीतको पहरे ।

ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वोपवीतेनोपनेह्यामि । (अर्थ पूर्व्ववत्)

फेर पुष्पमाला परिधान कर के यह मन्त्र पढ़े ।

Joint property of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

ओं श्रीरसिमयि रमस्व ।

(10A) उ.प. (तू श्री है मुझे शोभित कर) फेर ब्रह्मचारी आचार्य्य को अभिवाद करे यथा

१९ ओं अमुकगोत्रः अमुक ब्रह्माशिनोऽहम् भोः अभिवादये ।

आचार्य्य (पुष्पादिदान पूर्व्वक)। शुभमस्तु। फेर आचार्य्य और ब्रह्मचारी दोनो खड़े होकर प्रार्थना करें।

ओं पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्तेऽस्तु मा मा हिंसीः । ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव । ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च । माहं ब्रह्म निराकुर्य्यां मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्तु ॥

हे ईश्वर तुम हमारे पिता हो, पिता की न्याई ज्ञान शिक्षा दो, तुम्हे नमस्कार हो, मुझे विनाश न होने दो, मोह पापसे

(11) उ.प. मेरी रक्षा करो, हे देव! हे पिता। सब पाप मार्ज्जन करो। जो कल्याण है वह हमे भेजो। तुम जो सुखकर और
२. कल्याण कर हो, सुख कल्याण के आकर हो कल्याण कल्याणतर हो तुम्हे नमस्कार। फेर ब्रह्मचारी पढ़ें।

ओं य एकोऽवर्णो वहुधा शक्तियोगाद् वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति
वि चैति चान्ते विश्वमादौ स देवः स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥

जो एक और वर्ण हीन हैं, और जो प्रजाओंके प्रयोजन को जानकर वहुप्रकार शक्तियोग से विविध काम्य वस्तुओंका विधान करते हैं, सारा ब्रह्माण्ड आद्यन्त मध्यमे जिनमे व्याप्त होरहा है, वे दीप्यमान परमेश्वर हैं, वे हमे शुभ बुद्धि प्रदान करें। तदनन्तर वस्त्रादि पहर कर शिष्य आचार्य्यको प्रणाम करके स्वस्थानमे जावे।

विधि। स्त्रीयों के उपनयनमे यज्ञोपवीत कृत्य का परित्याग विधेय है।

मित्रविलास यन्त्रालय में छपी सन १८७४

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com